International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 5 Issue 09, September 2018 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 4.218
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

भारत में निजी विश्वविद्यालयों में महिला शिक्षा का प्रबंधन स्तर तथा ग्रामीण महिलाओं पर इसके प्रभाव

Shalochana Sangwan[1], Dr. Ramesh Kumar [2]

Department of Education

[1,2]OPJS University, Churu, Rajasthan

Abstract

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च स्तर पर विष्वविद्यालयों के शैक्षिक, सहशैक्षिक व भौतिक स्थिति का अध्येयताओं की उपलब्धि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस हेतु शोधकर्ता ने दत्तों का संकलन करने हेतु सर्वप्रथम अकादमिक वातावरण जानने हेतु मापनी को तीन स्तरों क्रमशः शैक्षिक गतिविधि मापनी, सहशक्षिक गतिविधि मापनी और भौतिक स्थिति मापनी महिला विद्यार्थी स्तर पर निर्मित की। इसके अलावा शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक स्तर पर अलग मापनी तैयार कर उसे प्रमापीकृत किया। तीनों प्रकार की मापनी के अंक निर्धारित किए गए। संबंधित न्यादर्श शिक्षार्थी एवं शिक्षक तथा प्रधानाध्यापक मापनी भरवाई गई तथा उनके अंकों को श्रेणीवार रखकर माध्य, प्रमाप विचलन, टी, सार्थकता स्तर निकाला गया। प्रस्तुत अध्याय में संबंधित चरों के अनुसार विष्वविद्यालयों की शैक्षिक, सहशैक्षिक और भौतिक स्थिति के प्राप्ताकों को परिकलित किए गये विविध मापों का विशद् विश्लेषण कर व्याख्या की जा रही है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोधकर्ता ने राजस्थान के उच्च स्तर पर विष्वविद्यालयों के शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं भौतिक स्थिति का अध्येयताओं की उपलब्धि के प्रभाव को जानने के लिए दत्तों का संकलन एवं विश्लेषण किया है।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव मन के अंधकार को मिटाकर उसके अन्तर्मन को प्रकाशित करती है। उसी प्रकार से मनुष्य को एक विशेष दृष्टि मिलती है उसी दिशा को जीवन की ज्योति भी कहा जाता है जो हमें सांसारिक सच से रूबरू करती है। यह जीवन शिक्षा से ही संभव है। शिक्षा मानव सभ्यता एवं सस्कृति के विकास की वाहक है, जो किसी भी राष्ट्र व समाज के विकास की दिशा को निर्धारित करती है। परिवर्तन एक शाश्वत प्रक्रिया है, यह परिस्थिति जन्य है जो समय के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। अतः शिक्षा भी युग व कालें के अनुसार विभिन्न सोपानों को पार करते हुए वर्तमान स्थिति तक पहुँची है। पुरातन से लेकर भूमण्डलीकरण के दौर तक हम शिक्षा को विभिन्न रूपों में देख सकते हैं। मानव के प्राचीनकाल व आरम्भिक जीवन की शिक्षा व्यवस्था क्या रही है? प्रमाणों के अभाव में इसे भली प्रकार से नहीं समझा जा सकता है। जब से हमें इंसान के विकास के इतिहास के पुष्ट प्रमाण मिले हैं, तब से हम उसकी शिक्षा व्यवस्था व परिस्थितियों को भली प्रकार से समझ सकते हैं।

व्यक्ति के प्रारम्भ से लेकर आजतक समाज व सत्ता के अनेक रूप देखने को मिल रहे है, इन सभी ने शिक्षा को अपने ढंग से प्रभावित किया है। भारतीय सन्दर्भ में अगर हम शिक्षा और उसके विभिन्न अकादमिक वातावरण को देखें, तो प्राचीन समय को स्वर्णिम युग कहा जा सकता है। ''नालन्दा व तक्षशिला विश्वविष्वविद्यालय की स्थापना की प्रेरणा गणराज्यों से मिली थी। जहां राजनैतिक अस्तित्व गिरने के साथ–साथ इनकी ख्याति भी कम होती चली गई और धीरे–धीरे ये शिक्षा के उच्च संस्थान राजसत्ता के लोभी राजाओं की नीतियों का शिकार हो गए और राजाओं के दृष्टिकोण के साथ–साथ शिक्षा भी बदलती चली

गई। भारतीय सन्दर्भों मे अकादमिक वातावरण की दृष्टि से धार्मिक स्कूलों से आश्रम व्यवस्था की अहम् भूमिका रही है। पुराने समय में शास्त्रार्थ में एक केन्द्रीय विद्या के रूप में अकादमिक वातावरण बनता रहा। इनकी एक लम्बी परम्परा रही है।

2.उच्च शिक्षा की परिभाषा, दशा एवं दिशा

स्वतंत्र भारत में उच्च शिक्षा का विस्तार हुआ है लेकिन क्या हमारे देश को यह उच्च शिक्षा, (क्योंकि शोध–प्रपत्र छात्राओं पर आधारित है) छात्राओं को जीवन दृष्टि देने में या उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सफल हुई है। यह एक बड़ा प्रश्न है! किसी भी देश की शिक्षा का स्वरुप कैसा हो? उस देश की संस्कृति एवं प्रगति के अनुरुप हो। वर्तमान में हमारे देश की शिक्षा का स्वरुप इस प्रकार का है क्या? देश की उच्च शिक्षा को शिक्षा की मूलभूत संकल्पना के साथ आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार ढालना होगा। इस हेतु इसके अनुरूप पाठयक्रम,पाठयचर्या की रचना हो। शोधकार्य को बढावा देने, शिक्षा की गुणवत्ता बढाने, देश की उच्च शिक्षा मूल्य आधारित बने, शिक्षा स्वायत्ता हो, उच्च शिक्षा की आर्थिक व्यवस्था कैसे हो। इन सब चिंतनीय विषयों पर इस प्रारूप के माध्यम से सुझाव देने का प्रयास किया गया है। पाठयक्रम एवं पाठयचर्या की पुर्नरचना पाठयक्रम की जडता को समाप्त करना।

आजकल शहरों में उच्च मध्यम स्तर के बीच युवा महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है। शहरों में मध्यम स्तर लेकिन यह अभी भी अपने शिक्षा के भविष्य में एक तत्काल निवेश के रूप में नहीं देखा जाता। इसमें सामाजिक भूमिकाएँ अपेक्षाकृत महिलाओं की आकांक्षाओं को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, पितृसत्तात्मक सामाजिक परिवेश में संरचना, माता–पिता से उनकी बेटियों की आय का उपयोग करने की उम्मीद नहीं की जाती है। इसलिए, यहां तक कि शिक्षित बेटियों को काम करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है और यदि वे ऐसा करते हैं, ता यह थोड़े समय के लिए ही संभव हो पाता है। शादी के बाद यह तय करना लड़के के परिवार का अधिकार है कि वह जीविकोपार्जन हेतु काम करेगी या नहीं।

इसलिए, अधिकांश युवा महिलाओं के लिए, उच्च शिक्षा भविष्य के जीविकोपार्जन से जुड़ी हुई नहीं है। यही कारण है कि महिलाएं कला और घरेलू विज्ञान में शामिल हो जाती हैं क्योंकि वे सस्ती और भविष्य में काम आने वाली हैं। ऐसा ग्रामीण परिवेश में पढ़ने वाली छात्राओं के लिए सोचा जाता है। परंतु हाल ही में पेशेवर पाठ्यक्रम में प्रवेश का अनुपात बढ़ा है। स्वतंत्रता पूर्व राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन में मानविकी शिक्षा, विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा के समन्वय की बात उठाई गई थी। आज भी वह समयानुकूल है। छात्राओं में समाज व देश के प्रति संवेदनशीलता जागृत की जाए। सामाजिक तथा नागरिक दायित्व का उन्हें बोध होना चाहिए। ामाजिक कार्य को अनिवार्य करना– इस हेतु राष्ट्रीय स्तर पर एक आयोग का गठन किया जाए तथा उच्च शिक्षा के प्रत्येक संस्थान को गांवों से या शहरी झुग्गी झोपड़ी से जोड़ा जाए। हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवं प्राचीन ज्ञान–विज्ञान को सभी स्तर पर अनिवार्य किया जाए। व्यावहारिक तथा व्यसायिक शिक्षा को पाठयक्रमों में शामिल किया जाए। सभी पाठयक्रम, पाठयपुस्तकों में व्याप्त विकृतियों एवं विसंगतियों जिसके द्वारा अपनी संस्कृति, परम्परा, धर्म एवं महापुरुषों को अपमानित किया जा रहा है उसको दूर किया जाए। प्रत्येक तीन वर्षों में पाठ्यचर्या की समीक्षा अनिवार्य की जाए जिससे शिक्षा में नवीनीकरण संभव हो सके।

3.शहरी निजी एवं ग्रामीण निजी विश्वविद्यालय के महिला विद्यार्थियों द्वारा बताए गए गतिविधि

शहरी निजी एवं ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की सहशैक्षिक गतिविधि में पाये जाने वाले अंतर का कारण यह हो सकता है कि निजी विष्वविद्यालयों के संचालक इस ओर समुचित ध्यान नहीं दे पाते उनका ध्यान केवल विष्वविद्यालय का अच्छा परिणाम देने में होता है दूसरी ओर प्रशिक्षित स्काउट मास्टर, प्रशिक्षित राष्ट्रीय कैडिट कोर प्रभारी, प्रशिक्षित राष्ट्रीय सेवा योजना प्रभारी, प्रशिक्षित खेल प्रभारी, प्रशिक्षित गाईड कैप्टन आदि का अभाव पाये जाने की वजह से सहशैक्षिक गतिविधि का अभाव पाया जाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि आज के इस भौतिकवादी यग में शिक्षा के बढ़ते बाजारीकरण की स्थिति में केवल विष्वविद्यालय संचालक अपितु प्रधानाध्यापक, शिक्षक गण, शिक्षार्थीगण एवं अभिभावकों में भी सहशैक्षिक गतिविधि के प्रति रूचि का अभाव देखा गया है। सहशैक्षिक गतिविधि से प्राप्त प्रमाणपत्र के बोनस अंक व्यवस्था समाप्त हो जाने के कारण राजस्थान स्तर पर इसका प्रभावी नियंत्रण नहीं हो पा रहा है। इन गतिविधियों में संलग्न महिला षिक्षकों को अतिरिक्त वेतन/पारिश्रमिक/प्रमोशन नहीं मिल रहा है। सहशैक्षिक गतिविधि से संबंधित संसाधनों का अभाव भी देखा गया है।

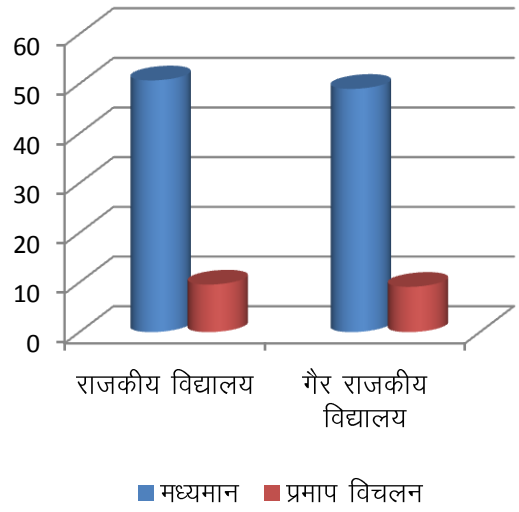

'हरी निजी एवं ग्रामीण निजी विश्वविद्यालय के महिला विद्यार्थियों द्वारा बताए गए भौतिक गतिविधि

ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की शैक्षिक स्थिति शहरी निजी विष्वविद्यालयों की तुलना में न्यून रहने का संभावित कारण है कि ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों के अधिकांश शिक्षक शहरों से आना जाना करते है जिससे उनका अधिकांश समय आने–जाने में ही व्यतीत हो जाता है इससे शारीरिक एवं मानसिक थकावट भी होती है जिससे उनका ध्यान पठन–पाठन में इतना नहीं रह पाता जितना शहरी निजी विष्वविद्यालयों के महिला षिक्षकों में होता है। ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की शैक्षिक स्थिति शहरी निजी विष्वविद्यालयों की तुलना में अपेक्षाकृत न्यून है।

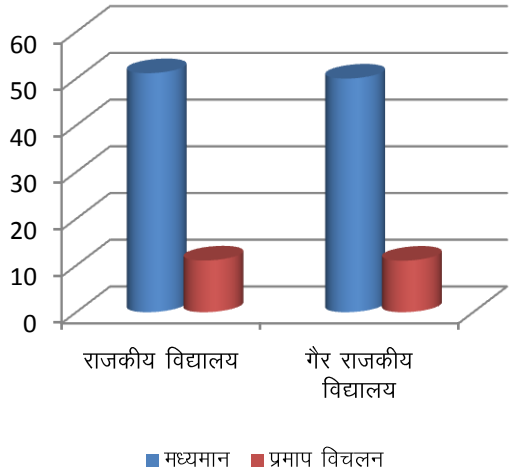

प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता ने तालिका एवं आरेख के माध्यम से शिक्षक, शिक्षार्थी तथा प्रधानाध्यापक के द्वारा बताये गये शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं भौतिक स्थिति के प्राप्तांक को परिकलित किया तथा उसकी विश्वसनीयता एवं वैद्यता की जांच कर विशद् विश्लेषण से व्याख्या की। आगामी अध्याय में शोधकर्ता द्वारा प्राप्त आरेख एवं तालिका की व्याख्या को मध्यनजर रखते हुए शोध सांराश एवं भावी शोध हेतु सम्भावनाएं प्रस्तुत करेगा।

4.शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के निजी विश्वविद्यालयों की शैक्षिक स्थिति के संबंध

शोध के दौरान उपलब्ध आकड़ों से यह विदित होता है कि राजस्थान के कोटा संभाग में उच्च स्तर पर शहरी निजी एवं ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की शैक्षिक स्थिति में अंतर पाया गया। ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की तुलना में शहरी निजी विष्वविद्यालयों की शैक्षिक स्थिति अधिक उच्च देखी गयी। ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की शैक्षिक स्थिति शहरी निजी विष्वविद्यालयों की तुलना में न्यून रहने का कारण है कि ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों के अधिकांश शिक्षक शहरों से आना जाना करते ह जिससे उनका अधिकांश समय आने–जाने में ही व्यतीत हो जाता है इससे शारीरिक एवं मानसिक थकावट भी होती है जिससे उनका ध्यान पठन–पाठन में इतना नहीं रह पाता जितना की शहरी निजी विष्वविद्यालयों के महिला षिक्षकों में होता है। अतः ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की शैक्षिक स्थिति शहरी निजी विष्वविद्यालयों की तुलना में अपेक्षाकृत न्यून है। निजी विष्वविद्यालय के शिक्षक अपने पेशे से पूर्ण वफादारी निभाते हुए समय पर विष्वविद्यालय आए। संस्था प्रधान उन्हें इस हेतु पाबंद करे । शिक्षा विभाग ऐसे शिक्षक जो विलम्ब से आते है उन पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करें।

5.शहरी एवं ग्रामीण निजी विश्वविद्यालयों की सहशैक्षिक स्थिति

शोध के दौरान शोधकर्ता ने आकड़ों के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकाला कि राजस्थान के कोटा संभाग में उच्च स्तर पर शहरी निजी एवं ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की सहशैक्षिक गतिविधि में अंतर पाया जाता है जो कि शहरी निजी विष्वविद्यालयों की तुलना में ग्रामीण विष्वविद्यालयों की सहशैक्षिक गतिविधि की स्थिति न्यून पायी गयी। शहरी निजी

विष्वविद्यालयों में विष्वविद्यालय से संबंधित मानवीय एवं भौतिक संसाधन पर्याप्त मात्रा में है, मूलभूत साधन बेहतर है। सहशैक्षक गतिविधि में संचालित सभी विभाग शहरों में स्थित है, सूचना तंत्र मजबूत है जबकि ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों में उपर्युक्त सुविधा अपेक्षाकृत न्यून है अतः ग्रामीण विष्वविद्यालयों की सहशैक्षिक गतिविधि की स्थिति शहरी निजी विष्वविद्यालयों की तुलना में अपेक्षाकृत कम आंकी गयी। सरकार एवं समाज को चाहिए कि ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों मे मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध करावे। मानवीय एवं भौतिक संसाधन मुहैया करावें। सूचना तंत्र को मजबूत करें

6.शहरी एवं ग्रामीण निजी विश्वविद्यालयों की सहशैक्षिक गतिविधि

राजस्थान के कोटा संभाग में उच्च स्तर पर शहरी निजी एवं ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की सहशैक्षिक गतिविधि में अंतर पाया जाता है। ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की सहशैक्षिक गतिविधि में अपेक्षाकृत न्यून स्थिति पायी गयी। समग्र रूप में दृष्टि डाले तो शहरी निजी एवं ग्रामीण निजी दोनों की सहशैक्षिक गतिविधि न्यून है लेकिन ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की अधिक न्यून स्थिति है। कारण कि ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों को सहशैक्षिक गतिविधि से संबंधित मिलने वाली साधन एवं सुविधाएं अपेक्षाकृत कम पायी गयी। ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों के संचालकों को चाहिए कि वे अपने विष्वविद्यालयों में महिला विद्यार्थियों के लिए ग्रामोण खेलों को बढ़ावा देवें। विष्वविद्यालय में समय–समय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता आदि आयोजित करें।

राजस्थान के कोटा संभाग में उच्च स्तर पर शहरी निजी विष्वविद्यालयों की भौतिक स्थिति अधिक सुदृढ़ पाई गई जबकि ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों की भौतिक स्थिति कमजोर पायी गयी। शोध के दौरान पाया गया कि शहरी निजी विष्वविद्यालय का शाला भवन, छात्रावास भवन, विज्ञान प्रयोगशाला, कम्प्यूटर प्रयोगशाला, पुस्तकालय, वाचनालय, खेल, मैदान एवं सामान बहुत ही व्यवस्थित एवं सुसज्जित अवस्था में पाये गये जबकि ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों में अपेक्षाकृत न्यून स्थिति थी। ग्रामीण निजी विष्वविद्यालयों के संचालकों, संस्था प्रधानों को चाहिए कि वे शहरी निजी विष्वविद्यालयों की भांति भौतिक संसाधन विकसित करे ताकि ग्रामीण महिला विद्यार्थियों को भी वे सभी सुविधा मुहैया हो सके जो कि शहरी महिला विद्यार्थियों को उपलब्ध है

7.निजी महिला शिक्षकों और निजी महिला शिक्षकों की शैक्षिक स्थिति

राजस्थान के कोटा संभाग में उच्च स्तर पर निजी महिला षिक्षकों और निजी महिला षिक्षकों की शैक्षिक गतिविधि में असमानता पायी गयी। शोध के दौरान पाया गया कि अधिकांश निजी विष्वविद्यालयों के शिक्षक, प्रशिक्षित होने के बाद भी शिक्षण कार्य के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं दूसरी ओर महिला षिक्षकों को सरकार द्वारा अन्य गैर शैक्षणिक कार्यों में लगा दिया जाता है परिणामस्वरूप शिक्षण कार्य प्रभावित होता है, जबकि निजी विष्वविद्यालयें के अधिकांश शिक्षक पूर्ण प्रशिक्षित नहीं होते। वे डण्डे के जोर पर महिला विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं, परीक्षा का भय दिलाया जाता है, बार–बार कक्षा टैस्ट लिए जाते हैं जिससे रटन्त विद्या के आधार पर महिला विद्यार्थी अच्छे अंकों से पास तो हो जाते हैं परन्तु गुणवत्ता की दृष्टि से वे

काफी कमजोर रहते है। शिक्षा अधिकारियों को चाहिए कि समय–समय पर दोनों प्रकार के विष्वविद्यालयों की उपर्युक्त कमियों को मध्येनजर रखते हुए सुधारात्मक एवं अनुशासनात्मक कार्यवाही करें।

8.निजी महिला शिक्षकों एवं निजी महिला शिक्षकों की सहशैक्षिक स्थिति के संबंध में

राजस्थान के कोटा संभाग में उच्च स्तर पर निजी महिला षिक्षकों और निजी महिला षिक्षकों की सहशैक्षिक गतिविधि में भी अंतर पाया गया।

शोध के दौरान देखा गया कि निजी विष्वविद्यालयों के संचालकों का निजी विष्वविद्यालयों के महिला षिक्षकों पर 100 प्रतिशत परीक्षा परिणाम देने का दबाव रहता है जिससे निजी शिक्षक रूचि के उपरान्त भी सहशैक्षणिक कार्य नहीं करवा सकते परिणामस्वरूप निजी महिला षिक्षकों की सहशैक्षिक गतिविधि कम आंकी गयी।

शिक्षा विभाग को चाहिए कि वे निजी विष्वविद्यालयों में सहशैक्षिक गतिविधि के सफल संचालन हेतु संचालकों एवं संस्था प्रधानो को पाबन्द करें।

राजस्थान के कोटा संभाग में उच्च स्तर पर निजी एवं निजी महिला षिक्षकों के वेतन में जमीन–आसमान का अंतर पाया गया। शोध के दौरान देखा गया कि निजी विष्वविद्यालयों में कार्यरत अधिकांश शिक्षक महज 5000 या 25000 रुपये में नौकरी कर रहे है अधिकांश शिक्षक प्रशैक्षिक योग्यता का मानदण्ड तो पूरा करते हैं लेकिन योग्यतानुसार वेतन का नहीं।

अतः निजी विष्वविद्यालयों में अध्ययनरत महिला विद्यार्थियों की स्थिति भी सोचनीय है क्योंकि वह उन महिला षिक्षकों से पढ़ता है जो स्वयं शोषित है, कुंठित है, दयनीय है, कारण कि निजी विष्वविद्यालयों के संचालक उनका भरपूर शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से शोषण करते हैं तो भला ऐसे उपेक्षित शिक्षक किस प्रकार शिक्षा दे पायेंगे। जबकि सरकारी शिक्षक अच्छा वेतन प्राप्त करने के उपरान्त भी अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़कर विष्वविद्यालयों में अनुपस्थित रहते है और केन्द्र के समान वेतन प्राप्त करने की मांग करते रहते हैं शिक्षा विभाग के तमाम अधिकारी इस बात को जानते हुए भी मूकदर्शक बने बैठे हैं। निजी विष्वविद्यालयों में दो अलग–अलग प्रकार के हिसाब रखे जाते हैं। महिला षिक्षकों को वेतन देने का तरीका बहुत ही शोषित है।

9.निजी शिक्षक एवं निजी शिक्षक के अकादमिक अभिवृद्धि स्थिति

राजस्थान के कोटा संभाग में उच्च स्तर पर निजी महिला षिक्षकों की अकादमिक अभिवृद्धि स्थिति निजी महिला षिक्षकों की तुलना में अपेक्षाकृत अच्छी हैं क्योंकि निजी विष्वविद्यालयों के सभी शिक्षक प्रशिक्षित होते हैं और अपने विषय से संबंधित समय–समय पर अभिनव प्रशिक्षण प्राप्त करते रहते हैं । सरकार द्वारा शिक्षा से संबंधित होने वाली कार्यशाला, सेमिनार, कार्यगोष्ठी में भाग लेते रहते हैं और उनमें अपने सुझाव लेख के माध्यम से देते रहते हैं जबकि निजी शिक्षको को इस प्रकार का कोई अवसर नहीं मिल पाता । अतः सरकार को चाहिए कि निजी महिला षिक्षकों को भी शिक्षा कार्यक्रमों में आमंत्रित करें ताकि वे भी अपने अमूल्य सुझाव दे सके ।

शोध के दौरान देखा गया कि ऐसे निजी विष्वविद्यालयों को अंगुलियों पर गिनना भी मुश्किल है जिनका स्टाफ घर–घर जाकर अभिभावकों से सम्पर्क कर महिला विद्यार्थियों को प्रवेश के लिए अभिप्रेरित कर रहे हो जबकि निजी विष्वविद्यालयों का स्टाफ घर–घर सम्पर्क करता है और अभिभावकों को अपनी स्कूल में प्रवेश दिलाने हेतु अभिप्रेरित करता है। अतः निजी विष्वविद्यालय के महिला षिक्षकों को चाहिए कि वे इस कार्य के प्रति अनदेखी नहीं करे।

10.निष्कर्ष

निजी विष्वविद्यालयों में विषय के निष्णात एवं उच्च योग्यता प्राप्त शिक्षक होते है। निजी विष्वविद्यालयों के शिक्षक निजी विष्वविद्यालयों के महिला षिक्षकों की तुलना में अधिक शिक्षित, प्रशिक्षित एवं अनुभवी होते हैं निजी विष्वविद्यालयों के सभी शिक्षक प्रशिक्षित होने के कारण उन्हें अध्यापन कार्य शिक्षण सूत्र, शिक्षण विधियां, शिक्षण प्रविधियां, शिक्षण सहायक सामग्री तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन की जानकारी होने के उपरान्त भो गैर शैक्षणिक कार्यों में लगने की वजह से शैक्षिक कार्य में समुचित ध्यान नहीं दे पाते। शोध के दौरान पाया गया कि निजी विष्वविद्यालयों के सभी शिक्षक प्रशिक्षित नहीं थे जिससे उनमें अध्यापन कार्य की कुशलता कम आंकी गई। इससे अध्येता की उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।।

शोधकर्त्ता ने दत्त संकलन वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण से सम्बन्धित कार्य किया जिसमें राजस्थान के कोटा संभाग में उच्च स्तर पर अकादमिक वातावरण को जानने के लिए प्रत्येक चर की तीन–तीन तालिका, डायग्राम एवं विश्लेषण शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं भौतिक स्थिति की जानकारी पृथक–पृथक प्राप्त की। प्रस्तुत अध्याय में शोध सारांश, शोध निष्कर्ष एवं भावी शोध हेतु संभावनाएं प्रस्तुत की गई है।

राजस्थान के कोटा संभाग में उच्च माध्यमिक स्तर पर निजी एवं निजी, शहरी तथा ग्रामीण, बालिका शिक्षा तथा सहशिक्षा में पायी जाने वाली असमानता को किस प्रकार दूर किया जाए? उपर्युक्त प्रकार के विष्वविद्यालयों में शैक्षिक गतिविधि, सहशैक्षिक गतिविधि तथा भौतिक स्थिति में किस प्रकार समानता लाई जा सके? उपर्युक्त प्रकार के विष्वविद्यालयों का अकादमिक वातावरण किस प्रकार अनुकूल बनाया जा सके? इन सब बातों को गहराई के साथ शोधकर्त्ता ने अपने निष्कर्ष में बताया है। शोधकर्त्ता ने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि शोध उसकी व्यक्तिगत धारणाएं, कल्पनाएं, छोटे अनुमान एवं किसी प्रकार की अभिनति का किंचित मात्र भी प्रभाव नहीं पड़े। प्रस्तुत शोध कार्य में इस बात का ध्यान रखा गया है कि जो भी निष्कर्ष सामने आये है वे शिक्षक, शिक्षार्थी एवं प्रधानाध्यापक द्वारा दिए गए उत्तरों के विश्लेषण एवं व्याख्या से प्राप्त हुए।

शोध के दौरान देखा गया कि निजी विष्वविद्यालयों में फीस नाम मात्र की है फिर भी नामांकन कम होता जा रहा है इस हालात के लिए सरकार की नीतियां ही जिम्मेदार है पिछले कुछ वर्षों में निजी विष्वविद्यालयों की जिस तरह से दुर्गति हुई है। उसकी वजह से शुल्क कम होने के उपरान्त भी अभिभावकों का इन स्कूलों से मोह भंग हो गया है। सरकारी स्कूलों की अनदेखी करके सरकार न अभिभावकों को शिक्षा के बाजार की तरफ धकेल दिया है। बाजार संवेदनहीन होता है। वहां मांग और पूर्ति का सिद्धान्त काम करता है। मार्केटिंग के जरिए ग्राहकों को फंसाया जाता है। निजी स्कूल भी यही कर रहे है इस

चक्कर में महिला विद्यार्थी और अभिभावक पिस रहे हैं और बाजार की शक्ल लेती जा रही है शिक्षा। यह गरीबों की पहुंच से दूर है और शिक्षा मंत्री अभी तक मूक दर्शक बने हुए है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. कोठारी, डी. एस. (2015). रिपोर्ट ऑफ एज्युकेशन कमीशन. नई दिल्ली : गर्वमेन्ट ऑफ इण्डिया प्रेस. पृ. 78.
[2]. य, एस. (2015).स्वतन्त्रता विशेषांक. आधुनिक भारतीय शिक्षक. नई दिल्ली : नेशनल काउसिल ऑफ एज्युकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेंनिग. पृ. 41.
[3]. वेणु सदगोपाल (2015). हमारी शिक्षा नीति और हमारे स्कूल. जयपुर : दिगंत्तर संस्थान. पृ. 20.
[4]. श्रीवास्तव आर. एस. (2015) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरखा एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
[5]. चौहान एम.एल. (2014), शिक्षा का अधिकार, नई शिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक पत्रिका, जयपुर.